Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

आदिवासी सामाजिक कला एवं परंपराएं

डॉ. एम. एल. अवाया*

* सहायक प्राध्यापक, शासकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, सेंधवा (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – आदिवासी शब्द दो शब्दों से 'आदि' और 'वासी' से मिलकर बना है 'आदि' का शाब्दिक अर्थ प्रारंभ या शुरू होता है एवं 'वासी' का अर्थ 'निवास करने वाला' होता है अर्थात जो प्रारंभ या शुरू से निवास करता हो, अर्थात आदिवासी का शाब्दिक अर्थ 'मूलनिवासी' होता है। आदिवासी, Aboriginal (एबोरिजिनल) शब्द का हिंदी अनुवाद हैं जिसका प्रयोग:- किसी भौगोलिक क्षेत्र के उन निवासियों के लिए किया जाता है जिसका उस भौगोलिक क्षेत्र से पुराना संबंध हो। अर्थात यह कहा जाता है कि आदिवासी ही किसी देश के मूल निवासी होते हैं भारत में आदिवासी समुदाय का संवैधानिक नाम (Constitution name of Tribal Community) अनुसूचित जनजाति (Scheduled Tribel) है जिसे संक्षिप्त में अ.ज.जा. या (ST) कहा जाता है।

भारत की जनसंख्या का 8-6% लगभग 10 करोड़ जितना एक बड़ा हिस्सा आदिवासियों का है। पुरातन लेखों में आदिवासियों कों 'आत्विका' कहा गया। महात्मा गांधी ने आदिवासियों को 'गिरिजन' अर्थात पहाड़ पर रहने वाले लोग कहकर पुकारा है। भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए 'अनुसूचित जनजाति' पद का उपयोग किया गया हैं। भारत में आदिवासियों को प्राय: जनजातीय लोग के रूप में जाना जाता है आदिवासी मुख्य रूप से भारतीय राज्यों में उड़ीसा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि में बहुसंख्यक व गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल में अल्पसंख्यक जबकि पूर्वोत्तर राज्यों में यह बहुसंख्यक है जैसे- मिजोरम। भारत सरकार ने इन्हें भारत के संविधान की पांचवी अनुसूची में 'अनुसूचित जाति' एवं 'जनजाति' में रखा जाता है। चंदा समिति ने सन 1960 में अनुसूचित जातियों के अंतर्गत किसी भी जाति को शामिल करने के लिए 5 मानक निर्धारित किया। भौगोलिक:- एकांकिपन, विशिष्ट संस्कृति, पिछड़ापन, संकुचित स्वभाव एवं आदिम जाति के लक्षण आदिस भारत में 461 जनजातियां है जिसमें से 424 जनजातियां भारत के 7 क्षेत्र में बटी हुई हैं। भारत के प्रमुख आदिवासी आंध्र, गौंड, मुंडा, खड़िया, बोडो, कोल, भील, सहारिया, संस्थाल, मीणा, उराव, लोहारा, वित्होर, पारधी, असुर, टाकणकार आदि है।

किसी भी संस्कृति के उद्गम के विषय में जानने और समझने में वांछित परंपरा की उस विधा से आधारभूत सहायता मिलती है आदिवासी कला का इतिहास उतना ही पुराना है जितना भारतीय ग्रामीण सभ्यता का दुर्भाग्यवश आदिवासी कलाओ का कोई क्रमिक इतिहास आज उपलब्ध नहीं है सिंधु घाटी की सभ्यता से मिले कला अवशेषों को यदि भारतीय आदिवासी कला के प्राचीनतम नमूने माना जाए जाए तो उसके बाद इनका प्रमाणिक उल्लेख 20वीं सदी के मध्य से मिलना आरंभ होता है कुछ अंग्रेजी विद्वानों ने भारतीय देशज कलाओं का सविस्तार उल्लेख किया है इस संबंध W.G. आर्चर, डॉ. वैरियर एल्विन, स्टैला क्रेमरिश एवं श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय के नाम प्रमुख है, जिनके सघन अध्ययनों से भारतीय आदिवासी कला आज विश्व कलाजगत में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना सकी है। यह तो निश्चित है कि भारत में मिले प्रागैतिहासिक गुफाचित्र या शैलचित्र वर्तमान आदिवासियों के पूर्वजों द्वारा किया गया कलाकर्म है। जंगलों के घटने एवं बढ़ते शहरीकरण ने आदिवासियों को ग्रामीण हिंदू संस्कृति के नजदीक ला दिया और परिणाम स्वरुप आदिवासियों के निराकार देवी - देवता और अनगढ़ पत्थरों लकड़ी, पत्थरों एवं मिट्टी की बनी प्रतिमाएं उनके देव स्थानों में विराजमान हो गई आदिवासी अपने सामान्य उपयोग की वस्तुएं तो स्वयं बना लेते थे परंतु उनमें इतनी तकनीकी दक्षता नहीं थी कि वे भट्टी जलाकर मिट्टी एवं धातु की प्रतिमाएं, आभूषण एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं बना सके अत: उन्होंने ग्रामी व्यावसायिक जातियों के शिल्पीयों को अपना लिया। यह शिल्पी व्यावसायिक जातियों जैसे:- लोहार, कुम्हार, धातु-शिल्पी, सुनार आदि जनजाति बहुल क्षेत्रों में आदिवासी समाज का अभिन्न अंग बन गयी।

जनजातियों की सांस्कृतिक परंपरा और समाज संस्कृति पर विचार की एक दिशा यहां से भी विचारणीय मानी जा सकती है। मानव विज्ञानियों और समाजशास्त्र के अधेताओ ने विभिन्न जनजातीय समुदायों का सर्वेक्षण मूलक व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया है और उसके आधार पर विभिन्न जनजातियों के विषय में सूचनाओं के विशद कोश हमें सुलभ हैं।

मध्यप्रदेश की प्रमुख आदिवासी परंपराएं- जनजाति किसी भी ऐसे ऐसे स्थानीय समुदायों के समूह को कहा जाता है जो एक सामान्य भू भाग पर निवास करता हो एक सामान्य भाषा बोलते हो और एक सामान्य संस्कृति का व्यवहार करता है। आदिवासी अपने स्वभाव से ही कलाप्रिय होते हैं। नृत्य-गान तो जैसे उनके खून में ही शामिल होता है। वे अपने शरीर, घर और उपयोगी वस्तुओं को बहुत ही कलात्मक ढंग से सजाते सवारते हैं। मध्यप्रदेश के बैतूल, होशंगाबाद एवं खंडवा, बड़वानी, खरगोन, झाबुआ, अलीराजपुर, जिले के निवासी कोरकू, बरेला, भिलाला, पेटालिया आदिवासी अनाज रखने की कोठिया बनाने में दक्ष होते हैं जिसमें गेहूं, ज्वार, मक्का और अन्य अनाज का संग्रह करते हैं।

1. मध्यप्रदेश के मंडला, डिंडोरी जिले के अगारिया, गौंड आदिवासी अपने घर की बाहरी दीवारों को मिट्टी से बनाए गए उभारदार भित्ति अलंकारों से

सजाते हैं।

2. झाबुआ एवं धार जिले में रहने वाले भील एवं भिलाला आदिवासियों द्वारा दीवारों पर अंकित किए जाने वाले पिठौरा चित्र मुख्यत: पुरुषों द्वारा चित्रित किए जाने वाले पिठौरा देव अनुष्ठानों में सम्बद्ध होते हैं।झाबुआ एवं धार जिलों में रहने वाले भील एवं भिलाला आदिवासियों द्वारा दीवारों पर अंकित किए जाने वाले टाटलू चितार, भित्ति चित्र मुख्यत: स्त्रियों द्वारा बनाए जाने वाले इन चित्रों का व्यावसायिक तौर पर दोहन होना अभी आरंभ नहीं हुआ हैं। पीठौरा यह एक मनौती पर्व है किसी घर पर किसी भी प्रकार की विपत्ति आने पर मनाया जाता है पीठोरा त्यौहार मे भील लोग भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हमारे घर में किसी भी प्रकार का संकट न आए तथा घर धन धान्य से परिपूर्ण और समृद्ध रहे। इस त्यौहार में सभी प्रकार के जानवरो के चित्र बनाएं जाते हैं जब चित्र को बनाते हैं उस समय पुजारा घूमता है और रातभर यह क्रम चलता रहता है और चित्र दीवार पर बनाएं जाते हैं साथ ही सुबह सुबह जो जवाई (दामाद) बकरा लाते हैं उसकी बलि दी जाती है।

3. गोदना :- गोंड, भारिया ,कोरकू व बैगा जनजाति में अंग चित्र पर उकेरने की विशेष कला है इस कला में नुकीले उपकरण द्वारा चुभा-चुभा-कर शरीर पर गोदा जाता है इसमें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग मालवण (वृक्ष) की छाल का रस अर्जुन, बेहड़ा आदि वृक्षों की छाल के रंगों को घोलकर तैयार किया जाता हैं।

4. श्योरपुर एवं मुरैना जिलों में रहने वाले सहरिया आदिवासी अपने घर सजाने हेतु सुंदर भित्ति अलंकरण बनाते हैं जिन पर वे विभिन्न रंग भी बनाते हैं।

5. मध्यप्रदेश गोंड, बैगा, सहरिया एवं भील आदिवासियों में शरीर पर गुदना चित्र बनाने की प्रथा है स्त्री एवं पुरुष दोनों ही गुदना चित्र बनवाते हैं।

6. मंडला एवं जबलपुर में गौंड आदिवासियों द्वारा बनाए जाने वाले अनुष्ठानिक मृणाशिल्प जिनमें घोड़े एवं बैल की आकृतियां तथा धार, झाबुआ में कुम्हारों द्वारा भील, भिलाला आदिवासियों के लिए अनुष्ठानिक मृणाशिल्प जिनमें भैंस, बकरी, गाय, ऊंट, बिल्ली, ठाठो आकृतियां तथा दैनिक उपयोग के लिए बनाए जाने वाले बर्तन आदि सम्मिलित है।

7. नवाई पर्व :- नवाई पर्व आदिवासी समाज अपने सामाजिक जीवन में बृहद सामाजिक परंपराओं ,मान्यताओं, रीति रिवाज और त्योहारों को समेटे हुए हैं इस दृष्टि में आदिवासी समाज एक समृद्ध समाज हैं इस इस समृद्ध समाज में एक त्यौहार नवाई पर्व मनाया जाता है जैसा कि नाम से स्पष्ट है वर्षा ऋतु में नई फसल आने के खुशी में विशिष्ट पूजा अर्चना द्वारा संपन्न की जाती हैं तत्पश्चात ही नई फसलों का उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष:- अब यह स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है कि आदिवासी परंपरा धार्मिक या सामाजिक अभिव्यक्तियों के पार अपने सौंदर्यबोध एवं शैलीगत विशेषताओं के कारण समाज में बहुत बड़े भाग में अपनी पैठ बना चुकी है और समाज में कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के अतिरिक्त अन्य कुछ लोगों ने भी जिसने बहुत बड़ा युवा वर्ग भी सम्मिलित है इन्होंने परंपरा को विस्तृत रूप से जानना शुरू किया और अपने शैली के भीतर रहकर प्रयोग करना भी प्रारंभ कर दिया हैं स्वयं सिद्ध है कि कलाकार भी अपने परिवेश के बदलते घटनाक्रम और बाजारवाद के चलते अपने आप को अछूता नहीं रख सका और यही वजह है कि कलाकार कभी ना कभी इसे भी अभिव्यक्त करने से नहीं चुकता।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. हीरालाल, मध्यप्रदेश का इतिहास।
2. नीमच डिस्ट्रिक्ट गजेटियर।
3. डॉ. गुलनाज तवर : बारेला जनजातीय (जीवन और संस्कृति)।
4. आनंद कुमार पांडे : मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. डॉ. शिव कुमार तिवारी, श्रीकमल शर्मा, म.प्र. की जनजातियां समाज एवं व्यवस्था।
6. महेश कुमार वर्णवाल : मध्यप्रदेश एक अध्ययन।

****